UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 6 भीष्म (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

भीष्म के बचपन का नाम देवव्रत थी। ये हस्तिनापुर के राजा शान्तनु और गंग के पुत्र थे। इन्होंने वेदशास्त्र की शिक्षा वशिष्ठ से और युद्ध कौशल परशुराम से सीखा था। ये शस्त्र-शास्त्र दोनों में निपुण थे।
यमुना तट पर आखेट करते हुए इनके पिता शान्तनु ने निषादराज की सुन्दर कन्या सत्यवती को देखकर उससे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। निषादराज ने शर्त रखी कि सत्यवती का पुत्र राजा बनेगा, देवव्रत नहीं। शान्तनु ने शर्त नहीं मानी और वे बीमार रहने लगे। भीष्म ने निषादराज से सत्यवती का विवाह अपने पिता से करने का अनुरोध किया। इन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की। सत्यवती से विवाह होने के बाद उसके दो पुत्र चित्रांगद और विचित्रवीर्य हुए। चित्रांगद की मृत्यु जल्दी हो गई और विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठे। उनके तीन पुत्र थे- धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर। धृतराष्ट्र अन्धे थे इस कारण पांडु को राजा बनाया गया, क्योंकि भीष्म राज्य स्वीकार नहीं कर सकते थे। ये अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे।
महाभारत के युद्ध में भीष्म कौरवों की तरफ थे। इन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं युद्ध में कृष्ण को शस्त्र उठाने पर विवश कर दूंगा। इनके घोर संग्राम करने पर कृष्ण ने क्रोधित हो, रथ का पहिया निकाल कर हमला करना चाहा। भीष्म की प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।
महाभारत के युद्ध से भीष्म ने दस दिनों तक सेनापति का कार्य किया। अर्जुन ने शिखण्डी को आगे करके इन्हें बाणों मे छेद दिया। भीष्म ने सूर्य के उत्तरायण होने तक प्राण न त्यागने की प्रतिज्ञा की।
भीष्म पितामह पराक्रमी राजनीतिज्ञ और धर्मज्ञ थे। इन्होंने युधिष्ठिर को ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, धर्म और नीति का उपदेश दिया। ये उपदेश सदैव मानव जाति का पथ प्रशस्त करते रहेंगे।

https://www.evidyarthi.in/